

वैश्विक सुरक्षा पुनर्चुनाव रणनीति और दृष्टिकोण

संपादक

प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, सैनिक शास्त्र विभाग
श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी

एवं

देविदास विजय भोसले

सहायक प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष,
रक्षा और सामरिक अध्ययन विभाग
तुलजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती, महाराष्ट्र



भारती पब्लिकेशंस

नई दिल्ली 110002

अनुक्रम

1. वैश्विक समस्याओं पर वैदिक ज्ञान की उपायदेयता
डॉ. दिव्या राणा 1
2. संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति प्रयासों में भारत की भूमिका
वैश्विक सुरक्षा के संदर्भ में
डॉ. कल्पना वैश्य 8
3. संयुक्त राष्ट्र के शांति कार्यक्रम में भारत की भूमिका
कांता वर्मा 12
4. आपदा प्रबंधन
डॉ. अनूप कुमार श्रीवास्तव 19
5. पर्यावरण प्रदूषण : एक वैश्विक समस्या वर्तमान संदर्भ में
गिरीश पाल 27
6. पर्यावरण सुरक्षा एवं समस्या
डॉ. हेमलता साहू 33
7. पर्यावरणीय सुरक्षा और समस्याएं
विरेंद्र कुमार सैनी, वरुण कुमार 40
8. पर्यावरण सुरक्षा और समस्या
ग्रा. (डॉ.) महावीर रामजी हाके 45
9. पर्यावरण अर्थशास्त्र : एक मूल्यार्कन
डॉ. राजेश मौर्य, प्रो. जे. पी. मित्तल 50
10. मध्यमवर्गीय आर्थिक प्रणाली में पर्यावरणीय संतुलन: मानसिक
व नैतिक दायित्व
राजेश कुमार सिन्हा 62

Copyright © प्रो. (डॉ.) सी. बी. भागे एवं देविदास विजय भोसले

First Published, 2021

ISBN : 978-93-90818-90-7

Printed in India:

भारती पब्लिकेशंस

4819/24, तीसरी मंजिल, अंसासी रोड़, नई दिल्ली

फोन : 011-2324-7537

मोबाइल : +91-989-989-7381

ई-मेल : bhartiipublications@gmail.com

info@bharatipublications.com

Website : www.bhartipublications.com

Published by Onkar Bharti for Bharti Publications.

Layout by : Neeru Graphics, S.P. Kaushik Enterprises

अस्वीकारण:

पुस्तक में दी गई विषय वस्तु पूर्ण रूप से लेखक के अपने विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक किसी भी विषय वस्तु के लिए जिम्मेवार नहीं है। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा किसी के द्वारा पुनरुत्पादित या प्रेषित बिना अनुमति के नहीं किया जा सकता है। इस प्रकाशन के संबंध में किसी भी व्यक्ति द्वारा अनधिकृत कार्य या नुकसान के लिए अपराधिक अभियोजन के लिए वह व्यक्ति उत्तरदायी होगा।

पर्यावरण संरक्षण के इसी क्रम में वर्ष 1997 में पृथ्वी-5 सम्मेलन क्योटो जापान में आयोजित किया गया। जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये, यूरोप के प्रत्येक देश को 8 प्रतिशत, संयुक्त राज्य अमेरिका को 7 प्रतिशत, जापान को 6 प्रतिशत, ग्रीन हाउस गैसों का स्तर कम करने को कहा गया। साथ ही चीन, रूस, भारत, ब्राजील, इंडोनेशिया आदि देशों के लिए भी उत्सर्जन मानक निर्धारित कर दिये गये थे, एवं ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में औसतन 5.2 प्रतिशत की कमी लाने का लक्ष्य रखा गया।

16 फरवरी, 2005 से क्योटो प्रोटोकॉल लागू हुआ जिसके अनुपालन करते हुए न्यूजीलैंड मई 2005 में, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन पर अंकुश लगाने हेतु कार्बन टैक्स का प्रवाधान करने वाला विश्व का पहला देश बन गया। जिसके बाद 1 जुलाई 2012 से ऑस्ट्रेलिया ने भी कार्बन टैक्स का प्रावधान किया और विक्टोरिया राज्य में दुनिया का सबसे बड़ा सोलर पावर प्लांट लगाया जा रहा है। स्वीडन विश्व का पहला देश है जहां बायोगैस के आधार पर रेलगाड़ी चलाई जा रही है इससे प्रतीत होता है कि विश्व का प्रत्येक देश पर्यावरण के महत्व को समझ गया है।

संयुक्त राष्ट्र प्रेमवर्क कन्वेंशन के तहत 12 दिसंबर, 2015 को पेरिस में आयोजित कांफ्रेंस ऑफ द पार्टिज 21 (CoP-12) में 192 देशों के द्वारा प्रतिभाग कर जलवायु परिवर्तन समझौते को स्वीकार किया। यह समझौता क्योटो प्रोटोकॉल के अतिरिक्त वैश्विक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने के उपायों के बारे में कार्य करता है। इस सम्मेलन का सबसे प्रमुख उद्देश्य विश्व के बड़ते तापमान को 2 डिग्री से कम पर लाना है प्रयास यह किया जायेगा कि तापमान 1.5 डिग्री पर आ जाये साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि सभी सदस्य देश वनों, जलाशयों, प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण के लिए आवश्यक योजना बनायें। साथ ही सदस्य देशों के द्वारा निर्णय लिया गया कि विकसित देश वर्ष 2020 तक 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर का फंड जुटाएंगे ताकि विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन रोकने के प्रयास किए जा सकें। यह भी निर्णय लिया गया कि समझौते का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 2023 में पुनरीक्षण करेंगे तथा प्रत्येक पाँच वर्ष बाद इसका पुनरावलोकन किया जायेगा।

वैश्विक स्तर पर्यावरण संरक्षण की रक्षा के लिए आवश्यक ही कदम उठाये जा रहे हैं लेकिन वर्तमान में मानवजाती के द्वारा स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल, को भी परिवर्तित कर दिया है बगैर इस बात को ध्यान रखें कि क्या समाज इन परिवर्तनों को सहन कर पायेगा।

आज आवश्यकता है कि विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह व्यक्तित्व, घरेलू, स्थानीय, राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण में सहयोग कर पर्यावरण को स्वच्छ और स्वस्थ बनाये।

पर्यावरण सुरक्षा और समस्या

प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके

पर्यावरण शब्द परि+आवरण से मिलकर बना है। परि का अर्थ है चारों ओर और आवरण का अर्थ है घिरा हुआ। अर्थात् पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से घिरा हुआ। इस प्रकार अपने आप का जो कुछ भी देखते हैं वही हमारा पर्यावरण है। जैसे नदी, पहाड़, तालाब, मैदान, पेड़-पौधे, जीव-जंतु वायु, वन मिट्टी आदि सभी हमारे पर्यावरण के घटक हैं। मानव के चारों ओर फैले हुए वातावरण को पर्यावरण की परिधि में माना है। मानव जन्म से मृत्यु पर्यन्त पर्यावरण में ही रहता है। पर्यावरण द्वारा दिया जाये तो वह आदर्श मानव के रूप में स्वस्थ नागरिक नहीं बन सकता। व्यक्ति को सारे ओर से ढँकनेवाला आवरण ही पर्यावरण कहलाता है। इसके अभाव में सुखद जीवन ही असम्भव है। हम सभी इतर घटकों का दैनिक जीवन में भरपूर उपयोग करते हैं अर्थात् हम इन घटकों पर ही निर्भर हैं।

पर्यावरण की परिभाषा

- 1) जे एस रॉस के अनुसार “पर्यावरण या वातावरण वह बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।”
- 2) हर्स, कोकवुस :- इनमे मतानुसार “पर्यावरण सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है तो प्राणी के जीवन तथा विकास पर प्रभाव डालता है।”
- 3) डॉ. डेविज:- “मनुष्य के संबंध में पर्यावरण से अभिप्राय भूतल पर मानव के चारों ओर फैले उन सभी भौतिक स्वरूपों से है। जिसके वह निरन्तर प्रभावित होते रहते हैं।”
- 4) शिक्षाशास्त्री टॉमसन - इनके मतानुसार “पर्यावरण ही शिक्षक है, शिक्षा का काम छात्र को उसके अनुकूल बनाता है।”

पर्यावरण की सुरक्षा

कोयला आधारित विद्युत केंद्रों से प्रदूषण से संबंधित चिंताओं तथा बड़े पैमाने पर राख के निपटान जोकि भारत उत्पादन का मुख्य आधार है। पर्यावरणीय रूप से सतत विद्युत विकास प्रोत्साहित करने की कार्यनीतियों के मध्य समाधान किया जा रहा है।

- वन रोपण के लिए स्पेशल पर्पज क्लिकल।
- कोयला आधारित केंद्रों के पर्यावरणीय निष्पादन सुधार के लिए शुरूआत।
- क्लीन डेवलपमेंट मैनेजमेंट
- आईएसओ 14001

1) वन रोपण के लिए स्पेशल पर्पज क्लिकल

वातावरण में कार्बन डाय ऑक्साईड कम करने के लिए वनरोपण और पर्यावरणीय उत्पाय करने के लिए पंजीकृत सोसायटी के रूप में एनटीपीसी और अन्य केंद्रीय विद्युत क्षेत्र उपक्रम संयुक्त रूप से एक स्पेशल पर्पज क्लिकल स्थापना की जा रही है। सोसायटी के कई प्रकार होंगे।

- राष्ट्रीय वनक्षेत्र को बढ़ाने के लिए सदस्यों द्वारा निवेश, उपयोग, सार्थक चौनेलाइजिंग शुरू करना।
- पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के माध्यम से एनटीपीसी और अन्य सदस्यों की विद्युत परियोजनाओं, वन रोपण के मिट्टी की उचित भूमिकी पहचान करना, जिसे राज्यवन विभागों, जिला विकास प्राधिकरणों आदि के साथ समन्वित किया जायेगा।
- भविष्य की परियोजनाओंको स्थापित करने के लिए एनटीपीसी एवं अन्य सदस्यों द्वारा भूमि अधिगृहित की जाती है, के लिए वन भूमि की वन स्वीकृति की शीघ्र खरीद प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना।
- एनटीपीसी एवं अन्य सदस्यों की परियोजनाओं के लिए अपेक्षित आवश्यक प्रतिपूरक वन रोपण करने के लिए एमआईएफ के अनुक्रिया, जिसमें वन भूमि के डायवर्जन की आवश्यकता है।

यह उल्लेखनिय है की एनटीपीसी अनुक्रिया के पहले ही 145 करोड़ वृक्षों को रोपण किया है, जो कि देश में वनरोपण के बड़े प्रयासों में से वास्तव में एनटीपीसी के रामगुंडम केंद्र के चारों ओर एनटीपीसी द्वारा किए गये वनरोपण के कारण तापमान 300 सेल्सियस तक कम हुआ है जो राष्ट्रीय दुरस्थ संवेदी अभिकरण हैदराबाद द्वारा किए गए अध्ययन में दर्शाया गया है।

फ्लार्ड (एश) उपयोग की कार्य योजना

सभी कोयला आधारित विद्युत केंद्र प्रति वर्ष 90 मिलीयन के लगभग फ्लार्ड (एश) का उत्पादन करते हैं। टीआईएफएसी का फ्लार्ड मिशन के सीमेंट के उत्पादन, ब्रिक्स , पेंवमेंट सामग्री, फ्लोर टाइल्स, वॉल पैनल्स आदि और कृषि, सडक निर्माण सडक भराई की पुनः भराई में फ्लार्ड एश के उपयोग के लिए कई उपयोगी अनुशांसाएँ की है।

राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं में जाँच के दौरान पाया गया कि फ्लार्ड एश परंपरागत उत्पादों की तुलना में उत्तम और टिकाऊ है। विद्युत, मकान, सडक, और पुलों के निर्माण में देश में विकसित किए जा रहे सरकारी भवनों के निर्माण अनिवार्य फ्लार्ड एश उत्पादकों का उपयोग के लिए कदम उठा रहा है, फ्लार्ड एश उत्पादों के उत्पादन और संवर्धन शुरू करने के लिए बाजार तंत्र की सहायता शुरू करने में राजकीय प्रोत्साहन देने के लिए कदम उठाना है।

कोयला आधारित केंद्रों के पर्यावरणीय निष्पादन में सुधार के लिए पहले:

- 1) एनटीपीसीने अपने 11 और 2 इसके द्वारा प्रबंधित किए जा रहे संयंत्रों के लिए आईएसओ 14001 मानक प्राप्त किया है अपने शेष संयंत्रों के लिए यही मानक प्राप्त करने की प्रक्रिया में है।
- 2) कंपनी में उष्मा दर में सुधार एक सतत प्रक्रिया है। जिससे विशिष्ट लाभ प्राप्त होते हैं। एनटीपीसी कर्मियों ने उष्मा दर में सुधार के लिए अगले पाँच वर्षों के लिए व्यापक कार्य योजना प्रस्तुत करने के केवल एनटीपीसी बल्कि राज्य विद्युत बोर्डों के विद्युत को भी कहा है।
- 3) एनटीपीसी की सुपर थर्मल पावर भारत में पहली बार सुपर क्रिटिकल तकनीकी अपनाएगी इसके पश्चात एनटीपीसी नॉर्थ करणपुरा बाह कहलागाँव-II परियोजनाओं के लिए सुपर क्रिटिकल बॉयलर तकनीकी अपनाने की योजना बनाई है।
- 4) आईसीसीसी प्रौद्योगिकी पर आधारित एक कर्मशियल स्कूल प्रदर्शन संयंत्र की स्थापना के संबंध में एनटीपीसी भारतीय कोयले के साथ आईसीसीसी की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका से उर्जा विभाग को कोल सैपल भेजा। इसके पश्चात एनटीपीसी से कर्मचारियों का एक दल संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रचालनाधीन आईसीसीसी संयंत्र के साथ संबंधित प्रयोगशाला का दौरा करेगा।

क्लीन डेवलपमेंट मैकेनिज्म (सीडीएस) :-

पर्यावरण से बढ़ने वाली संबंधित चिंताओं का समाधान करने और पर्यावरणीय निष्पादन में सुधार लाने के लिए टाटा एनर्जी रिसर्च पर्यावरणीय निष्पादन में सुधार लाने के

लिए टाटा एनर्जी रिसर्च इन्स्टीट्यूट की सेवा सीडीएम पर विद्युत मंत्रालय को परामर्शी सेवाएँ प्रदान करने के लिए लगाया गया है। विचारार्थ शर्तों में परियोजना गठन सहित प्रत्येक परियोजना के लिए बेस लाइन सर्वे, सीडीएम पक्षों के साथ विक्रेता, नियमित राज्यों के काउंटर चार्ट सीडीएम पार्टियों की पहचान कार्बन डायऑक्साइड निगरानी की लागत और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन कमी का सत्यापन और परियोजना कार्यान्वयन का अवलोकन करना शामिल है।

आईएसओ 14001

राष्ट्री के सतत विकाय के लिए नवंबर 1975 में स्थापित राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम लिमिटेड के कुल उत्पादन की 26% अंशदान 21749 मेगावाट की संस्थापित क्षमता के साथ भारत की सबसे बड़ी युटिलिटी है। एनटीपीसी ने अपनी क्षमता को दोगुना करने की योजना बनाई है। एनटीपीसी ने हाल ही में हाइड्रो क्षेत्र में बदलाव और वितरण आरएण्डएम आदि के लिए एक संयुक्त उद्यम कंपनी का गठन किया है। ध्वनि पर्यावरणीय प्रबंध प्रणाली और प्रयासों के अनुसरण के माध्यमसे एनटीपीसी के 18 केंद्रों को आईएसओ 14001 प्रमाणपत्र का प्रमाणन किया गया है। एक जिम्मेदार कारपोरेट सिटीजन के रूप में एनटीपीसी सीएसआर के संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक कांयैक्ट का सदस्य है।

कंपनी पर्यावरण और प्रकृति के साथ वैश्विक मानकों और संपूर्ण तालमेल से भविष्य में केंद्रीत और बल देते हुए विद्युत का उत्पादन करेगी।

आज का मानव औद्योगिक के जंजाल में फँसकर स्वयं भी मशीन का एक ऐसा निर्जिव पूर्जा बनकर रह गया है की वह अपने पर्यावरण की शुद्धता का ध्यान भी न रख सका। अब एक एक और नयी समस्या उत्पन्न हो गयी है। वह है प्रदूषण की समस्या। इस समस्या की ओर आजकल सभी देशों का ध्यान केंद्रीत है। जनसंख्या की असाधारण वृद्धि और औद्योगिक प्रगतीने प्रदुषण की समस्या को जन्म दिया है और आज इससे इतना विकराल रूप धारण किया है कि उससे मानवता के विनाश का संकट उत्पन्न हो गया है।

प्रदुषण के प्रकार-निम्नलिखित है

क) वायु प्रदूषण :- वायु जीवन का अनिवार्य स्रोत है। प्रत्येक प्राणी को स्वस्थ रूप से जीने के लिए शुद्ध विभाग प्रमुख, वायु अर्थात ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है जिस कारण वायुमंडल में इसकी विशेष अनुपात में उपस्थिति आवश्यक है। जीवधारी सौंस द्वारा ऑक्सीजन ग्रहण करता है और कार्बन डाई-ऑक्साईड ग्रहण कर हमे ऑक्सीजन प्रदान करते है। इससे वायुमंडल में शुध्दता बनी रहती है। आजकल वायुमण्डल में ऑक्सीजन गैस का संतुलन बिगड गया है और वायु अनेक हानिकारक गैसों से प्रदूषित हो गयी है।

ख) जल प्रदूषण :- जल को जीवन कहा जाता है और यह भी माना जाता है कि जल में ही सभी देवता निवास करते है। इसके बिना जीव जन्तु और पेड पौधों का भी अस्तित्व नहीं है। फिर भी बड़े-बड़े नगरों के गन्दे नाले और सीवर नदियों के जल में आकर मिला दिये जाते है। कारखानो का सारा मैला बहकर नदियों के जल में आकर मिलता है। इससे जल प्रदुषित हो गया है और उससे भयानक बीमारियों उत्पन्न हो रही है जिससे लोगो का जीवन ही खतरों में पड गया है।

ग) ध्वनि प्रदूषण :- ध्वनि प्रदुषण भी आज की नयी समस्या है। इसे वैज्ञानिक प्रगति ने पैदा किया है। मोटार, कार, जेट, विमान, कारखानों के, सायरन, मशीने तथा लाऊडस्पीकर ध्वनि के सन्तुलन को बिगाडकर ध्वनि-प्रदुषण उत्पन्न करते है। अत्याधिक ध्वनिप्रदूषण से मानसिक विकृति, तीव्र क्रोध, अनिद्रा एवं चिडचिडापन जैसी मानसिक समस्यायें तेजी से बढ रही है।

घ) रेडिओधर्मी प्रदूषण :- आज कें युग मे वैज्ञानिक परिक्षणों का जोर है। परमाणु परीक्षण निरंतर होते ही रहते है। इसके विस्फोट से रेडिओधर्मी पदार्थ सम्पूर्ण वायुमण्डल में फैल जाते है और अनेक प्रकार से जीवन को क्षति पहुँचाते है।

ड) रासायनिक प्रदूषण :- कारखानो से बहते हुऐ अपशिष्ट द्रव्यों के अलावा रोगनाशक तथा कितक नाशक दवाइयोसे और रासायनिक खादों से भी स्वास्थ्य पर प्रतिकुल प्रभाव पडता है। इस प्रदूषण से मनुष्य जानलेवा बिमारियों का शिकार हो रहा है। कोई अपंग होता है तो कोई बहरा, किसी की दृष्टि शक्ति नष्ट हो जाती है तो किसी का जीवन विविध प्रकार की शारीरिक विकृतियाँ मानसिक कमजोरी, असाध्य कैंसर एवं ज्वर इन सभी रोगों का मूल कारण विषैला वातावरण ही है।

समस्या का समाधान

वातावरण को प्रदुषित होने से बचाने के लिए वृक्षारोपण सर्वश्रेष्ठ साधन है। दुसरी ओर वृक्षों के अधिक कटाव पर भी रोक लगायी जानी चाहिए। कारखाने और मशीने लगाने की अनुमति उन्ही लोगो को दी जानी चाहिए। जो औद्योगिक कचरे और मशीनों के धुएँ को बाहर निकालने की समुचित व्यवस्था कर सके।

प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार प्रदुषण की समस्या के प्रति जागरूक है। न्यायालय द्वारा प्रदुषण फैलाने वाले उद्योगों को महानगरों से बाहर ले जाने के आदेश दिये गए है। यदि जनता भी अपने ढंगे से इन कार्यक्रमों मे सक्रिय सहयोग दे और यह संकल्प ले कि जीवन में आनेवाले प्रत्येक शुभ अवसर पर कम से कम एक वृक्ष अवश्य लगाएगी तो निश्चित ही हम प्रदुषण के दुष्परिणामों से बच सकेंगे और आनेवाली पीढियों को भी इसकी काली छाया से बचाने में समर्थ हो सकेंगे।